International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 5, May- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

तीर्थनगर की सामाजिक एवं सामुदायिक संरचना

डा. प्रमोद कुमार शर्मा,
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
समाजशास्त्र विभाग
सेठ फूलचन्द बागला (पी.जी.) कालेज, हाथरस।

वृन्दावन एक धार्मिक नगर है। जिसका नगरीय–समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन किया गया है। इसलिए इस अध्ययन में नगरीय समाज का एक वैयक्तिक विषय विश्लेषण करने का निश्चय किया गया है। अन्य समाजों की तरह नगरों में भी मनुष्यों के सामाजिक सम्बन्धों की व्यवस्था पायी जाती है। इसलिए नगरीय सामाजिक सम्बन्धों के प्रतिमानों और इन सम्बन्धों के ताने–बाने का वैज्ञानिक विश्लेषण करना आवश्यक है। नगर में पाये जाने वाले नगरवासियों के अन्तः सम्बन्धों को समाजशास्त्रियों ने सामाजिक संरचना कहा है। नगर में भी लोगों के अन्तः सम्बन्धों की एक कार्यात्मक व्यवस्था होती है।

उत्तर प्रदेश के एक प्रमुख तीर्थ केन्द्र और धार्मिक नगर की सामाजिक संरचना का विधिवत विश्लेषण करने के लिए हमें यहॉ सामाजिक और सामुदायिक संरचना के प्रत्यय अथवा अवधारणा का स्पष्टीकरण कर लेना हमारे लिए सर्वप्रमुख आवश्यकता है। हरबर्ट स्पेन्सर ने सामाजिक संरचना को समाज की संरचना कहा है।[1] कार्ल मैनहीन ने लिखा है सामाजिक संरचना अन्तः क्रियात्मक शक्तियों का जाल है। जिससे सम्बन्धों के प्रतिमानों की उत्पत्ति होती है।[2] इसी तरह गर्थ और मिल्स का मत है कि सामाजिक संरचना की परिभाषा में कार्य का संयोग प्रमुख है।[3] नेडल इस सम्बन्ध में लिखते हैं कि संरचना मॉगों की क्रमबद्धता को प्रकट करती है जिसे स्थानान्तरणीय माना जा सकता है जो अपेक्षाकृत परिवर्तनीय होती है। [4]

मैकाइवर एवं पेज ने भी लिखा है समितियॉ सामाजिक संरचना की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग हैं।5 अतः सामाजिक संरचना और सामुदायिक संरचना में समाज विशेष की सामाजिक संस्थाओं और सामाजिक समूहों तथा सामाजिक समितियॉ और इनमें पाये जाने वाले सम्बन्धों के प्रतिमानों का समावेश होता है।

परिवार और विवाह–

परिवार और विवाह रूपी संस्था में प्रत्येक समाज की उपस्थिति रहती है। इस दृष्टि से तीर्थनगर वृन्दावन में भी इन संस्थाओं का सारभौमिक अस्तित्व पाया जाता है। इस दृष्टिकोण से शोधार्थी ने अपने निदर्श से तत्सम्बन्धी जानकारी और ऑकड़े एकत्रित करने का प्रयास किया है। इस संदर्भ में इस तीर्थ समुदाय की सामाजिक स्तरीकरण सम्बन्धी संस्थाओं की विलक्षणताओं की भी यहॉ खोज करने का यत्न किया गया है। अन्य समुदायों की तरह वृन्दावन नगर की भी एक विशिष्ट सामुदायिक संरचना है। इस दृष्टि से यहॉ विभिन्न और विशिष्ट समूह और सामाजिक संगठन कार्यरत है। इन सभी दृष्टिकोणों से इस शोधकार्य में सूचनायें और ऑकड़े एकत्रित करके उनका यहॉ विश्लेषण करने का यत्न किया गया है।

इस नगर में पारिवारिक संरचना की दृष्टि से संयुक्त एवं वैयक्तिक दोनों प्रकार की प्रणालियॉ पायी जाती हैं। वृन्दावन नगर में रहने वाले परिवारों की नगरीय पृष्ठभूमि के साथ–साथ ग्रामीण पृष्ठिभूमि की भी झलक मिलती है। धार्मिक नगर वृन्दावन में संयुक्त और वैयक्तिक दोनों प्रकार के परिवार उपस्थित हैं। यहॉ आकड़े यह दर्शाते हैं कि अन्य नगरों की तरह इस तीर्थनगर में भी वर्तमान समय में संयुक्त परिवार प्रणाली का विघटन हो रहा है, और वैयक्तिक परिवारों की उत्तरोतर वृद्धि हो रही है।

सामाजिक और सामुदायिक संरचना समाज विशेष की सामाजिक संस्थाओं के मेरूदण्ड हैं। इसलिए संचनात्मक अध्येताओं को इन संस्थाओं के प्रति अपना ध्यान केन्द्रित करना परम आवश्यक होता है। इसीलिए इस शोधकार्य में हमने वृन्दावन तीर्थ नगर के विशेष संदर्भ में सर्वप्रथम इस समाज की नाभिकीय स्थिति में अवस्थिति परिवार और विवाह की संस्थाओं के सम्बन्ध में निदर्शित पारिवारिक इकाईयों के प्रति निधियों से बहुआयामी और बहुपक्षीय ऑकड़ों का एकत्रीकरण करके उनका यहॉ समाजशास्त्रीय विश्लेषण करने का हर संभव प्रयास किया है।

विवाह की संस्था सामाजिक संरचना का एक महत्वपूर्ण आधार है। इसके विभिन्न आयाम और पक्ष है। इस दृष्टि से जीवन साथी को प्राप्त करने की विभिन्न प्रणालियॉ, विवाह निषेध, विाह की समस्यायें जैसे पर्दा प्रथा, विधवा विाह, बालविवाह, दहेजप्रथा और वरवधू की योग्यतायें आदि दृष्टिकोण उल्लेखनीय स्थान रखते हैं। वृनदावन के विभिन्न धार्मिक समूहों में विवाह की सर्वमान्य प्रणाली नियोजित विवाह का प्रचलन है। इस दृष्टि से यह समुदाय परम्परावादी पृष्ठभूमियों का होने के कारण देव विवाह प्रणाली में विश्वास रखता रहा है। यहॉ पर इस दृष्टिकोण से प्रेमविवाह और सिविल विवाह आदि प्रणालियॉ भी पूर्णतः अनुपस्थिति है।

महिलाओं की सामाजिक स्थिति

भारत में सामान्यतः विवाह संस्था का प्राचीन स्वरूप अभी ग्रामीण और परम्परावादी समुदायों में प्रचलित है। इस दृष्टि से यदि हमारे अध्ययन क्षेत्र के समुदाय के सम्बन्ध में विचार करते हैं तो हमें यहॉ नगरीकरण और औद्योगीकरण के प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर नहीं होते हैं। क्योंकि यह समुदाय धार्मिक समुदाय होने के कारण किन्हीं दृष्टियों से अभी भी प्राचीनशास्त्रों के निर्देशानुसार आश्रम व्यवस्था, वर्णव्यवस्था और जाति प्रथा का अनुमोदन करने के साथ–साथ परिवार और विवाह संस्थाओं के प्रति भी रूढ़िवादी दृष्टिकोण अपनाते हैं। यद्यपि वैयक्तिक परिवार नियोजन आदि दृष्टिकोणों से इस समुदाय में कुछ प्रकृतिशीलता की झलक हमें दृष्टिगोचर हुई है। धार्मिक नगर में दहेज की समस्या से भी महिलायें ग्रसित रही हैं।

आज भारतीय विवाह संस्था विशेष रूप से हिन्दू समुदाय में जीवनसाथी चयन के आधारों को लेकर भी विवादास्पद परिस्थितियॉ विकसित हो गयी हैं। इस सम्बन्ध में धन, शिक्षा और व्यावसायिक पद के आधार प्रमुख स्थान रखे हुए प्रतीत होते हैं। यद्यपि वरवधू का कुल, वंश, शिक्षा और सौन्दर्य भी आज की परिस्थितियों में आकर्षण का आधार माने गये हैं।

इस प्रकार जीवनसाथी बचपन से लेकर विवाह निषेध ओर अन्य वैवाहिक समस्याओं से इस नगर की महिलायें सदैव से ग्रसित रहने रहने के कारण इनकी समाज में जो स्थिति है उसे संतोषप्रद नहीं कहा जा सकता है। यद्यपि महिला शिक्षा के विकास से इस सम्बन्ध में भविष्य में कुछ आशायें की जा सकती हैं।

सामाजिक स्तरीकरण–

सामाजिक संरचना के विश्लेषण में सामाजिक स्तरीकरण का विषय सर्वप्रमुख स्थान रखता है। विशेष रूप से भारत जैसे समाज में इस विश्लेषण की उपस्थिति अति अनिवार्य है। क्योंकि यहॉ पर प्राचीन युग से वर्ण व्यवस्था और जाति प्रथा का प्रधान स्थान रहा है परन्तु यदि समकालीन परिस्थितियों पर विचार किया जाय तो हमें इन व्यवस्थाओं में परिवर्तन और विकास की प्रक्रिया दृष्टिगोचर होती है। क्योंकि प्रारम्भ में चार वर्ण प्रमुख रहे हैं। इनमें ब्राहाण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों को सम्मिलित किया जाता है। कालान्तर में उपजातियों और गोत्र आदि के आधार पर सामाजिक स्तरीकरण के बहु आयामी दृश्य देखने को मिलते हैं।

विगत वर्षों में हमारे देश में हरिजन कल्याण और आरक्षण सम्बन्धी नीतियों के तहत जन्मगत सामाजिक आधार और शिक्षा आदि को लेकर इस स्तरीकरण की व्यवस्था में नये आयाम विकसित हो गये हैं। इस दृष्टि से सवर्ण वर्ग, पिछड़ा वर्ग और अनुसूचित वर्ग आदि के नामों से आदि का स्तरीकरण और विभाजन किया जाता है।

वृन्दावन की सामुदायिक संरचना–

समाजशास्त्रियों ने समुदाय की विभिन्न रूप में अवधारणायें प्रस्तुत की हैं–

जिन्सवर्ग– ''समुदाय को एक निश्चित भू–भाग पर रहने वाली उस समस्त जनसंख्या के रूप में वर्णित किया जा सकता है। जो उनके जीवन को नियंत्रित करने वाले नियमों की समान व्यवस्था से बंधी हुई होती है।''[6]

ए.डब्ल्यू. ग्रीन–''समुदाय संकीर्ण प्रादेशिक घेरे में रहने वाले उन व्यक्तियों का समूह है जो जीवन के सामान्य ढंग को अपनाते हैं। एक समुदाय एक स्थानीय क्षेत्रीय समूह है।''[7]

इन अवधारणाओं के आधार पर हम वृन्दावन को एक नगरीय समुदाय कहने के साथ–साथ नगरीय तीर्थ समुदाय भी कहते हैं। क्योंकि यह नगर एक धार्मिक के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, क्योंकि वृन्दावन में जो भी विभिन्न समूह रहते हैं वे सब धार्मिक समूह के अन्तर्गत आते हैं। धार्मिक समूह वे समूह होते हैं जो अपने जीवन क्रम में धार्मिक गतिविधियों में सर्वाधिक रूप से रूचि लेते हैं अस्तित्व के लिए धर्म पर आधारित हैं।

वृन्दावन नगर की निश्चित भौगोलिक सीमा है और इस सीमा के अन्तर्गत जो विभिन्न समूह निवास कर रहे हैं ये सामान्यतः धार्मिक जीवन प्रणाली अपनाये हुए हैं। इन समूहों में साधुसंत, गोस्वामी, पुजारी, पंडे, पुरोहित, रासधारी, भिक्षुक, निराश्रित तथा तीर्थयात्री समूहों का अत्यन्त उल्लेखनीय स्थान है। ये सभी समूह और इनके संगठन सब मिलकर एक धर्मप्रधान समुदाय का निर्माण किये हुए हैं।

वृन्दावन तीर्थ समुदाय की संरचना का विश्लेषण करने के लिए शोधार्थी ने अपने अध्ययन क्षेत्र के इन विभिन्न धर्मसमूहों की जनसंख्यात्मक सामाजिक और प्रकार्यात्मक विशेषताओं का यहॉ पता लगानें का प्रयास किया है। इस दृष्टि से हम इन तीर्थ समूहों का प्रत्येक का यहॉ संरचनात्मक विवेचन करने का यत्न करते हैं

सारिणी क्रमांक –01

निदर्शित सूचनादाताओं का धर्म–समूहों सम्बन्धी विवरण

क्रम सं.	व्यवसाय	संख्या	प्रतिशत
01	गोस्वामी / पुजारी	40	13.3
02	तीर्थयात्री	40	13.3
03	रासधारी	35	11.6
04	पंडा	35	11.6
05	कथावाचक / पुरोहित	35	11.7
06	सार्वजनिक क्षेत्र में कार्यरत	35	11.7
07	व्यापारी	20	6.7
08	मन्दिर कर्मचारी	20	6.7
09	श्रमिक	20	6.7
10	भिक्षुक	20	6.7
		300	**100.00**

साधुजन– वृन्दावन नगर में साधुजन विभिन्न आश्रमों का संगठन बनाये हुए हैं। इन आश्रमों की संख्या वृन्दावन तीर्थनगर में सैकड़ों है। आश्रम की परिभाषा के अन्तर्गत आने वाले छोटे–बडे सहस्त्रों साधु

आश्रम वृन्दावन में उपस्थित हैं। इन आश्रमों में कुछ ऐसे भी आश्रम हैं जहॉ पूरे समय एक दो साधु पूरे समय स्थायी रूप से निवास करते हैं।

पंडा और यजमान– हमारे अध्ययन क्षेत्र मन्दिरों की नगरी वृन्दावन में पंडा/यजमान व्यवस्था में लगे हुए समूह का भी महत्वपूर्ण स्थान है। इनमें से भी यहॉ विभिन्न स्वरूप पाये जाते हैं। इस दृष्टि से गौतम, सनाढ्य, सारस्वत और गौड पंडों का प्रमुख स्थान है।

वृन्दावन में इनकी पारिवारिक इकाईयों के वारे में समाजशास्त्रीय शोधकार्य में विस्तार से विवेचन किया गया है। इस समूह की समग्रता के सम्बन्ध में निम्नलिखित ऑकड़े महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

वृन्दावन के पंडों की पारिवारिक संरचना

पंडों के प्रकार	गौतम	सनाढ्य	सारस्वत	गौड़	कुल
	515	420	212	073	1220
प्रतिशत	42.22	34.42	17.37	5.98	100

भिक्षुक और निराश्रित समूह– भारत के तीर्थनगर लोगों की दानपुण्य करने की भावनाओं को बनाने का प्रयास करते हैं। इसलिये यहॉ दान लेने वाले विभिन्न समूह और उपसमुदायों का विकास हो जाता है। इस कारण यहॉ विभिन्न रूपों में निराश्रित और सांसारिक विविधताओं से ग्रसित निराश्रित पुरूषों और महिलाओं का व्यापक एकत्रीकरण प्राकृतिक रूप में हो जाता है। इस दृष्टि से अपने अध्ययन क्षेत्र इस मन्दिरों की नगरी को देखें तो यहॉ बंगाली महिलाओं की एक अत्यन्त विकराल स्थिति विकसित हो गयी है।

पुरोहित कथावाचक समूह– मन्दिरों की नगरी वृन्दावन में कथावाचक समुदाय भी निवास करता है। यह नगर द्वापर से लेकर जब तक धार्मिक नगर रहा है। यहॉ पर बहुत उच्चकोटि विद्वान हुए हैं जो पुराणों, भागवत, रामायण आदि का अध्ययन करके अपनी छवि को उजागर करते हैं। इस नगर के कथावाचकों का यह पैतृक व्यवसाय बन गया है। वह अपनी जीविका चलाने के लिए वृन्दावन नगर में रहकर या बाहर जाकर धन अर्जित करते हैं। अपने परिवार का पालन–पोषण करते हैं। ऐसा कहा जाता है कि कलयुग में भगवान के चरित्र को सुनने एवं उनके द्वारा बनाए हुए कुछ नियमों पर चलने से पाप कम हो जाते हैं।

तीर्थयात्री समूह– भारत विविधताओं वाला देश है। यहॉ अनेकता में एकता की कहावत चरितार्थ होती है। यहॉ विभिन्न देशों, प्रान्तों से लोग आकर एक–दूसरे के साथ सहवास, सहभोजन, सहदर्शन, सहपरिक्रमा, संकीर्तन, कथाश्रवण, पवित्र स्नान और विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन करते हैं। सांस्कृतिक एकात्मकता की दृष्टि से वृन्दावन तीर्थ विभिन्न जाति, भाषा, समूह में एकीकरण के भाव जागृत करता रहा है। यहॉ आकर तीर्थयात्रीगण अपने समस्त सामाजिक और सांस्कृतिक भेदभावों को भूलकर भक्ति में एकीकृत हो जाते हैं। यहॉ लम्बे अंतराल के लिए सहवास करने पर भी उन्हें जातिवाद, अस्पृश्यता, सांप्रदायिकता, भाषावाद, क्षेत्रवाद आदि समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ता है।

सुझाव–

1– भारत के अन्य सांस्कृतिक और स्वास्थ्य केन्द्रों की तरह वृन्दावन का भी एक पर्यटक केन्द्र घोषित करना अति आवश्यक है।

2– वृन्दावन और ब्रज के अन्य तीर्थ स्थलों पर वर्तमान युग में भिक्षावृत्ति की समस्या अनियमित रूप से विकसित हो गयी है। इस प्रवृति पर नियंत्रण रखने हेतु भारत के वर्तमान भिक्षावृत्ति कानून में संशोधन करके इसे इस तीर्थ संकुल में प्रभावी बनाना अति आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. Herbert Spencer- The Principles of Sociology 1897, PP-471,489
2. Karl Mannheim- 'Ideology and Utopia', 1960 PP-45-46
3. Garth and Mills- Charactor and Social Structure, PP-22-23
4. S.F. Nadel- The Theory of Social Structure, 1962, P-2
5. R.M. Maciver- Society 1953, P-12
6. M. Givsberg- Reason and unreason in society, 1947, P-18
7. A.W. Green- Sociology, P-193
8. मुरारीलाल शर्मा– तीर्थ केन्द्र की जजमानी प्रथा का समाजशास्त्रीय अध्ययन, पी. एचडी. शोध कार्य आगरा वि.वि.
9. आशीष पारिक– ब्रजभूमि के गोस्वामी–पी.एचडी. शोधार्थी, आगरा वि.वि. 1983